ओ मेरे प्यारे लाडले बच्चों तुम्हें घर ले जाने आया हूँ।
पावन बने बिना जा नहीं सकते ये समझाने आया हूँ।
खूब भोग लिया इन्द्रियों का सुख अब ये लालच छोड़ो।
बांधो मुझसे प्यार का नाता बाकी सारे रिश्ते अब तोड़ो।
स्वर्ग के सुख के आगे इस दुनिया का सुख कुछ भी नहीं।
सम्पूर्ण पवित्र जीवन के आगे विकारी जीवन कुछ भी नहीं।
अगर पाना है स्वर्ग का सुख तो इन्द्रियों का सुख छोड़ो।
अपने मन बुद्धि को सिर्फ एक शिव बाबा की तरफ मोड़ो।
इन्द्रियों का सुख कभी भी सच्चा सुख नहीं कहलाता है।
ऐसा सुख भोगकर प्राणी निर्धन कंगाल बन जाता है।
ऐसे निर्धन और कंगाल सदा स्वर्ग के सुख को तरसेंगे।
ऐसे पतित शूद्रों के ऊपर तो धर्मराज के डंडे ही बरसेंगे।

खालो कसम आज से देह के सुख का त्याग करेंगे जरूर।
सदा पवित्र रहने के लिए अब हमको मरना भी होगा मंजूर।
सम्पूर्ण पावन बनने वाले ही स्वर्ग में करेंगे लक्ष्मी का वरण।
ऐसी पावन पूज्य आत्माओं के छुएगी सारी दुनिया चरण।
ॐ शांति